IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 4, Issue 3, January 2024

डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में नारी स्वतंत्रता और न्याय के विचार

अनुषा सिंघल[1] व डॉ. वेद कला यादव[2]
शोधार्थी, हिंदी विभाग[1]
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग[2]
सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश

डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में नारी चेतना का अध्ययन एक व्यापक एवं गहराई से समझाने योग्य विषय है। उनकी कहानियों में नारी का स्वरूप और स्थान विविधता से प्रस्तुत किया गया है। वे नारी को एक सकारात्मक और सक्रिय शक्ति के रूप में उत्पन्न करती हैं, जो समाज में परिवर्तन का अवसर बनाती है। डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में नारी चेतना का अध्ययन करते समय, हमें उनकी व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण को समझने का अवसर मिलता है। उनकी कहानियाँ नारी के अंतर्निहित प्रतिबिम्ब को प्रकट करती हैं, जिसमें उनकी स्वतंत्रता, साहस, और सामर्थ्य का प्रतिबिम्ब होता है। इस अध्ययन के माध्यम से हम डॉ. मीरा कांत की कथाओं में नारी के प्रति उनकी विशेष संवेदनशीलता और सम्मान को अनुभव करते हैं। उनकी कहानियों में नारी का दर्शन विकसित होता है, जिससे समाज में समानता और सम्मान की भावना उत्पन्न होती है। डॉ. मीरा कांत के कथा साहित्य में नारी चेतना का अध्ययन हमें समाज की समस्याओं और नारी के स्थान पर नए प्रकार के विचार को समझने का माध्यम प्रदान करता है। उनकी कहानियाँ नारी के स्वतंत्रता और समानता की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती हैं, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

मुख्य शब्दः नारी, स्वतंत्रता, समानता।

सन्दर्भ

1. मीराकांत,एक कोई था कही नहीं –सा,वाणी प्रकाशन,दिल्ली प्रथम सस्करण (२००६)
2. ला पियरे,साइक्लॉजी पृ० 37
3. रत्नाकर पाण्डेय, हिंदी साहित्य सामाजिक चेतना,पृ०156
4. भोलानाथ तिवारी आधुनिक हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्टभूमि, पृ0 201
5. कालिका प्रसाद वृहद हिंदी कोश पृ० 664

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in